Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :9.014(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
UGC Approved (2017), Peer Reviewed and Refereed International Journal
Volume:13, Issue:7(5), July: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Revieved : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

"स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन"

डॉ. नीलम त्यागी
प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग
सी.एस.एस.एस.पी.जी. कॉलेज, माछरा, मेरठ

श्रीमति अलका रानी
शोधार्थी
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

सारांश– शोधार्थी द्वारा "स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन" पर शोध कार्य किया गया है। इस शोध कार्य में शोधार्थी ने स्नातक स्तर पर नियमित शिक्षण पद्धति द्वारा अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया है। शोधार्थी ने शोध कार्य के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि– स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न है। इसका तात्पर्य है कि स्नातक स्तर पर जो विद्यार्थी नियमित शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से अध्ययन करते हैं उनकी अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न होता है। जो विद्यार्थी नियमित शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से अध्ययन करते हैं उनकी समस्याओं का समाधान कक्षा में होता रहता है और वे समस्याओं का अनुभव कम करते हैं। इसलिए नियमित स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के सामने अध्ययन सम्बन्धित समस्याएं कम ही सामने आती हैं। इस तरह से स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए नियमित शिक्षण पद्धति एक अच्छी पद्धति है। विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए विद्यार्थियों के माता–पिता को अपने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देकर अच्छा बनाना चाहिए। विद्यालयों का वातावरण लोकतांत्रिक होना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपने मन की बात बिना दबाव के कह सकें एवं तनाव, कुन्ठा आदि से बच सके तथा उनमें अध्ययन सम्बन्धित समस्याएं कम हो सके। विद्यालय की शिक्षण प्रकिया बाल केन्द्रित होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी बिना दबाव के अध्ययन कर सकें। विद्यार्थियों को स्वयं सीखने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

शब्द कुंजी– नियमित शिक्षण पद्धति एवं अध्ययन सम्बन्धी समस्या।

परिचय– नियमित शिक्षण पद्धति का तात्पर्य ऐसी शिक्षण प्रणाली से है जिसके अंतर्गत अध्यापक और छात्र का नियमित संपर्क होता है। नियमित शिक्षण पद्धति एक परंपरागत शिक्षण प्रणाली है। नियमित शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत पूर्व योजना के अनुसार कार्य होता है विद्यार्थी को निश्चित स्थान, निश्चित समय एवं निश्चित विषयों की शिक्षा दी जाती है। शिक्षण प्रणाली के अंतर्गत विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन विद्यालय आते हैं जहां पर अध्यापक से शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। यहीं पर विद्यार्थियों में सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास किया जाता है। विद्यालय में अध्ययन का समय, पाठ्यक्रम आदि निश्चित होता है जिसे एक निश्चित अवधि में पूरा करना होता है। नियमित शिक्षण प्रणाली में मूल्यांकन प्रणाली निश्चित होती है। शिक्षण प्रणाली एक प्रभावशाली शिक्षण प्रणाली है। प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों के योग को आसानी से समझाया जा सकता है इस शिक्षण प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों में सामूहिकता के गुणों का विकास किया जा सकता है इस शिक्षण प्रणाली का उपयोग छोटे बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है इस शिक्षण प्रणाली द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी विषयों का सही प्रकार से अध्ययन कराया जा सकता है। इस शिक्षण पद्धति द्वारा जहां एक और विषयों का अध्ययन कराया जाता है वहीं दूसरी और जीवन के लिए आवश्यक बातों को सिखाया जाता है। यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के लिए तैयार करती है। नियमित शिक्षण पद्धति के माध्यम से अध्ययन करते समय विद्यार्थियों को अध्ययन से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं का तात्पर्य उन समस्याओं से होता है जिनका सामना विद्यार्थी द्वारा अध्ययन में किया जाता है। इन समस्याओं द्वारा विद्यार्थियों का धन प्रभावित होता है। समस्याएँ ज्ञान की खोज में सहायता करती हैं शिक्षण कार्य में विद्यार्थी अध्ययन से संबंधित समस्याओं का समाधान किया जाना आवश्यक होता है अन्यथा विद्यार्थी अपना शिक्षण कार्य अच्छी प्रकार से नहीं कर पाते हैं। विद्यार्थी की अध्ययन से संबंधित विभिन्न समस्याएँ हो सकती हैं जैसे शिक्षण केंद्र का विद्यार्थियों के घर से दूर होना, पाठ्यक्रम का अधिक या कम होना, पाठ्यक्रम का विद्यार्थी के स्तर के अनुसार नहीं होना, शिक्षण कार्य का विद्यार्थी के स्तर के अनुसार न होना शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों की बातों को न सुनना, अध्यापक केंद्रित शिक्षण प्रक्रिया का होना, शिक्षा का जीवन से संबंधित न होना, विद्यार्थियों की शैक्षिक परेशानियों का सही समय पर समाधान नहीं होना, विद्यार्थी के प्रति कठोर व्यवहार का होना, पढ़ाया हुआ समझ में नहीं आना, मूल्यांकन प्रक्रिया का जटिल होना, शिक्षण में अभिप्रेरणा का अभाव शिक्षण प्रणाली की उपलब्धता नहीं होना। अध्ययन से संबंधित समस्याओं के समाधान से विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम को आसानी से समझ लेते हैं। शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करना आसान हो जाता है, शिक्षण का विद्यार्थी के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। विद्यार्थी सीखने के लिए स्वयं प्रेरित होते हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :9.014(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
UGC Approved (2017), Peer Reviewed and Refereed International Journal
Volume:13, Issue:7(5), July: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

उद्देश्य– स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना– स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न है

शोध विधि– इस शोध कार्य की प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया है।

शोध जनसंख्या– शोधार्थी ने इस शोध कार्य में शोध जनसंख्या के रूप में मेरठ एवं सहारनपुर मंडल के राज्य विश्वविद्यालयों से सम्बद्धित अनुदानित महाविद्यालयों में नामांकित स्नातक स्तर के द्वितीय वर्ष/चतुर्थ सेमेस्टर के सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है।

शोध न्यादर्श एवं उनका प्रतिचयन– इस शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में 150 नियमित छात्र, 150 नियमित छात्राओं को लिया है। इसमें छात्र एवं छात्राओं को समान प्रतिनिधित्व दिया है। इस कार्य के लिए शोधार्थी ने मेरठ मंडल एवं सहारनपुर मंडल परिक्षेत्र के राज्य विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित अनुदानित महाविद्यालयों की सूचियों को प्राप्त किया। राज्य विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित अनुदानित महाविद्यालयों की सूची में से सह शिक्षा वाले महाविद्यालयों की सूची को तैयार किया। इसके बाद इस सूची में से दो महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन प्रविधि से किया गया। इसके बाद प्रत्येक महाविद्यालयों की स्नातक स्तर के द्वितीय वर्ष/चतुर्थ सेमेस्टर से 150 छात्र एवं 150 छात्राओं का चयन किया।

शोध उपकरण– शोधार्थी ने शोध कार्य में स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने के लिए स्वयं शोघ उपकरण का निर्माण किया है। इस शोध उपकरण में 50 कथन हैं।

सांख्यिकीय विधि– शोधार्थी ने स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने के लिए प्रतिशत प्रविधि का उपयोग किया गया है।

शोध आंकड़ों का संकलन– शोधार्थी द्वारा इस शोध कार्य में आंकड़ों के संकलन के लिए चयनित किये गये महाविद्यालयों में जाने के बाद वहां के प्राचार्य से सर्म्पक करके शोध के उद्देश्य के अनुसार विद्यार्थियों का चयन किया और उन्हें शान्त वातावरण में बैठा कर विद्यार्थियों को शोध उपकरण के बारे में सामान्य बातें बताकर उनको उपकरण देकर सूचनाओं को भरने के लिए कहा और जब वे सभी सूचनाओं को भर देते हैं तो उनसे शोध उपकरण को ले लिया।

शोध आंकड़ों का विश्लेषण– शोधार्थी द्वारा इस शोध कार्य के उद्देश्य ''स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना'' के बारे में शोधार्थी ने शोध कार्य की परिकल्पना ''स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न है'' हेतु प्रदत्तों का संकलन किया गया और उनके सांख्यिकीय विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए–

नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के स्तर हेतु तालिका

क्रमांक	विद्यार्थी	प्रतिशत	प्राप्त अंक रेंज	अध्ययन सम्बन्धी समस्या स्तर
1	89	23.66	35 से अधिक	उच्च
2	80	26.66	16 से 34	सामान्य
3	131	49.66	16 से कम	निम्न

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :9.014(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
UGC Approved (2017), Peer Reviewed and Refereed International Journal
Volume:13, Issue:7(5), July: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Revieved : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

उपरोक्त तालिका के आधार से यह पता चलता है कि स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्या स्तर कम है। अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं के बारे में उच्च स्तर वाले विद्यार्थी कम हैं और निम्न स्तर वाले विद्यार्थी अधिक हैं। यहां उच्च स्तर वाले विद्यार्थी 23.66 प्रतिशत, सामान्य स्तर वाले विद्यार्थी 26.66 प्रतिशत और निम्न स्तर वाले विद्यार्थी 49.66 प्रतिशत है। इस तरह से स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्या स्तर कम है। इस तरह से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न है।

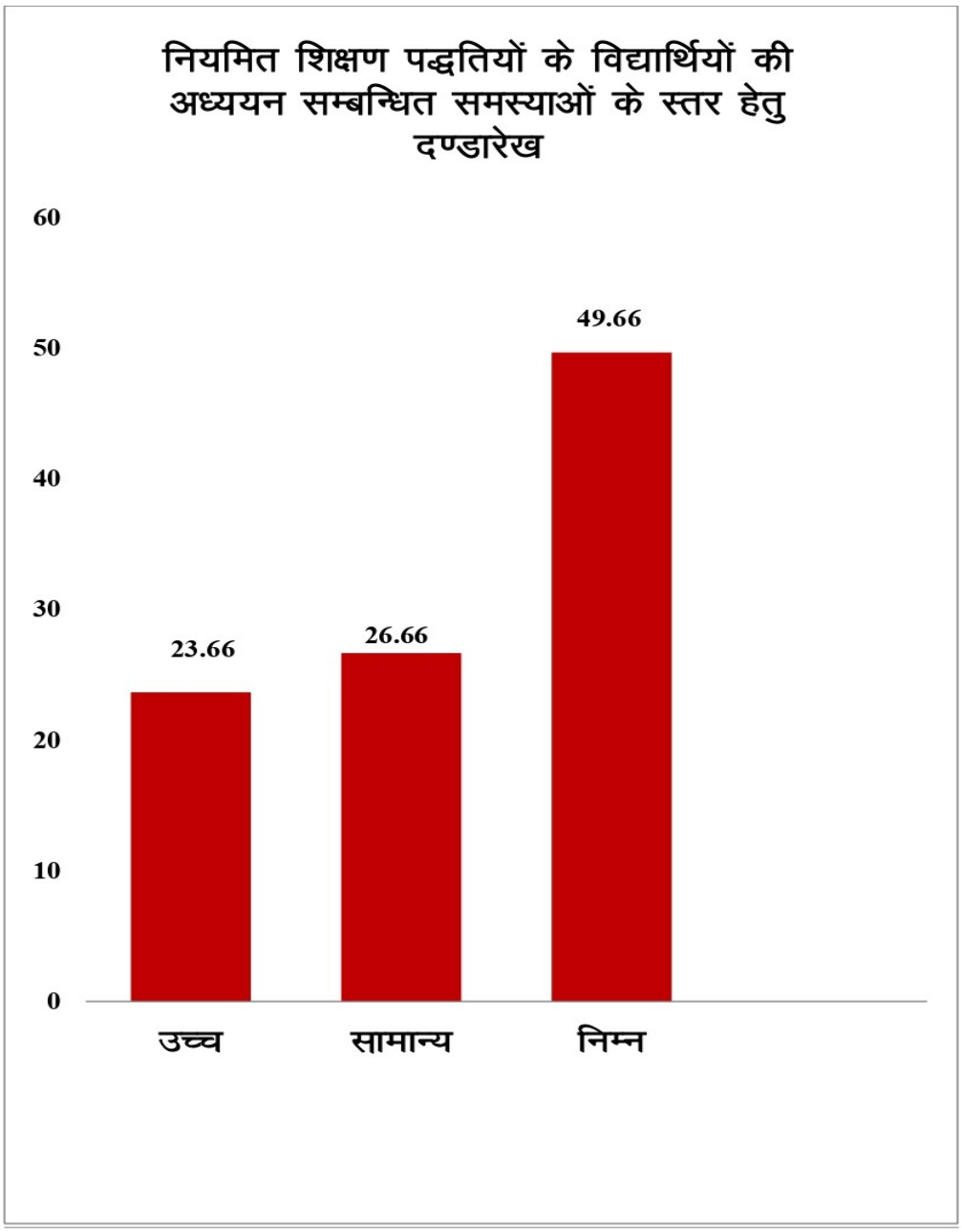

शोध निष्कर्ष– स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न है।शोधार्थी द्वारा इस शोध कार्य के उद्देश्य ''स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना'' के बारे में शोधार्थी ने शोध कार्य की परिकल्पना ''स्नातक स्तर के

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :9.014(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
UGC Approved (2017), Peer Reviewed and Refereed International Journal
Volume:13, Issue:7(5), July: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Revieved : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न है'' हेतु प्रदत्तों का संकलन करके उनके सांख्यिकीय विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– स्नातक स्तर के नियमित शिक्षण पद्धतियों के विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न है। इसका तात्पर्य है कि स्नातक स्तर पर जो विद्यार्थी नियमित शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से अध्ययन करते हैं उनकी अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का स्तर निम्न होता है। शायद इसका कारण यह है कि जो विद्यार्थी नियमित शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से अध्ययन करते हैं उनकी समस्याओं का समाधान कक्षा में होता रहता है और वे समस्याओं का अनुभव कम करते हैं। इसलिए नियमित स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के सामने अध्ययन सम्बन्धित समस्याएं कम ही सामने आती हैं। इस तरह से स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए नियमित शिक्षण पद्धति एक अच्छी पद्धति है।

सुझाव–

- विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए विद्यार्थियों के माता–पिता को अपने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देकर अच्छा बनाना चाहिए जिसके लिए माता पिता द्वारा परिवार का वातावरण स्वास्थ्य वर्धक बनाया जाना चाहिए, घर में क्लेश, लड़ाई झगड़ा आदि नहीं करना चाहिए तथा विद्यार्थियों को चिन्ता, तनाव, अवसाद, अलगाव आदि से बचाना चाहिए।
- विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा को बढ़ाने एवं अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए अभिभावकों द्वारा विद्यार्थियों के अच्छे खान पान पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए समाज का वातावरण सही होना चाहिए।
- विद्यालयों का वातावरण लोकतांत्रिक होना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपने मन की बात बिना दबाव के कह सकें एवं तनाव, कुन्ठा आदि से बच सके तथा उनमें अध्ययन सम्बन्धित समस्याएं कम हो सके एवं अभिप्रेरणा का विकास हो सके।
- विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए आवश्यक है कि विद्यालय की शिक्षण प्रकिया बाल केन्द्रित होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी बिना दबाव के अध्ययन कर सकें।
- विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए अध्यापकों को बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों को प्रयोग करना चाहिए। विद्यार्थियों को स्वयं सीखने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।
- विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रम किये जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों में बुद्धि, विवेक का विकास हो सके।
- सरकार द्वारा ऐसी योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का विकास हो सके।
- विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धित समस्याओं को कम करने के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- अस्थाना, डॉ. विपिन (2010), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- कौल, एल. (2010), शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.।
- गुप्ता, डॉ. एस.पी. (2001), आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
- तिवारी, मनीष कुमार (2016), इन्टरनेशनल जनरलस् आफॅ मल्टीडसीपेलेनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च।
- तिवारी, प्रदीप कुमार एवं डा. सिंह सतीश कुमार (2017), दिल्लीः इन्टरनैशनल जनरल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड डबलपमेंट।
- भटनागर, आर.पी., भटनागर ए.वी. एवं भटनागर, एम (1997), शिक्षा अनुसंधानः विधि एवं विश्लेषण, मेरठः लायल बुक डिपो।
- पण्डेय, के.पी.(1998), शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- राय, पी.एन. (1993), अनुसन्धान परिचयय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन।
- सिंह. (2021), स्नातक स्तर पर नियमित एवं दूरस्थ शिक्षण पद्धति द्वारा अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन. शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका।
- सिंह, ए. (2023), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा का संदर्भ. अप्रकाशित शोध पत्र।
- सिंह, अरूण कुमार, (2006), मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली, सातवाँ संशोधित संस्करण।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :9.014(2024); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
UGC Approved (2017), Peer Reviewed and Refereed International Journal
Volume:13, Issue:7(5), July: 2024
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Revieved : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

- सिंह, डॉ. आर. एन. (2010), आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान, आगराः आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
- शुक्ला, सी. एस.(2019), शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः धनपतराय पब्लिकेशन कम्पनी।
- शर्मा, डॉ. डी. पी. (2004), शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- www.uttamhindu.com/politics/
- www.drishtiias.com.
- www.bbc.com/hindi/india
- www.grammarly.com/Research/Paper
- www.ijsr.net
- www.amazon.in/Research Paper